गुरुमाई चिद्विलासानन्द के जन्मदिवस २०१९ के सम्मान में विश्वशान्ति के लिए प्रार्थना और मंगल कामना

श्रीगुरुमाई के जन्मदिवस के अवसर पर, उनकी यह इच्छा है कि हम सब विश्वशान्ति के लिए एक प्रार्थना व मंगल कामना अर्पित करें।

गुरुमाई जी ने हमें प्रकाश के तीन रूपों के विषय में सिखाया है : सूर्य, चन्द्र और अग्नि। अग्नि के माध्यम से पृथ्वी का आकाश के साथ सम्पर्क स्थापित होता है।

गुरुमाई जी ने हमें यह भी सिखाया है कि कैसे हम आदर, श्रद्धा व भक्तिभाव के साथ अग्नि के समक्ष आएँ। जब हम अग्नि की पूजा करते हैं तब हम प्रकाश के इन तीनों रूपों के प्रति अपनी प्रार्थनाएँ अर्पित कर रहे होते हैं। हम इस ब्रह्माण्ड के प्रकाश का, हृदय के प्रकाश का सम्मान करते हैं। और जब अग्नि से उत्पन्न होने वाला धुआँ हमारी प्रार्थनाओं को स्वर्ग तक ले जाता है तो हमारी प्रार्थनाएँ सुनी जाती हैं।

हमें जो प्रार्थना व मंगल कामना अर्पित करनी है, उसे श्रीगुरुमाई ने चुना है, और यह वेदों तथा उपनिषदों में से है।

श्रीगुरुमाई कहती हैं, “कृपा का प्रकाश, शान्ति के प्रकाश का अनुसरण करता है। शान्ति का प्रकाश, कृपा के प्रकाश का अनुसरण करता है।”

ॐ।

हे ईश्वर, हम असत्य से सत्य की ओर गमन करें।
हम अज्ञान के अन्धकार से ज्ञान के प्रकाश की ओर बढ़ें।
हम मृत्यु से अमरत्व की ओर,
अस्थायित्व से शाश्वतता की ओर बढ़ें।

ॐ।

पारलौकिक आकाश में शान्ति जगमगाए।
अन्तरिक्ष में यानी ऊपर आकाश व नीचे पृथ्वी के बीच के स्थान में शान्ति चमचमाए।
पृथ्वी पर सर्वत्र तथा इसके जलाशयों में शान्ति का प्रकाश व्याप्त हो।
समस्त पौधों व वृक्षों से,
समस्त फलों व फूलों से,
समस्त आरोग्यदायी वनस्पतियों और पोषणकारी अन्नपदार्थों से शान्ति प्रसरित हो।

जिसमें चिति सतत प्रवाहशील है,
ऐसे इस अनन्त ब्रह्माण्ड का संचालन करने वाले
समस्त दिव्यात्माओं को व
समस्त देवी-देवताओं को शान्ति प्राप्त हो।
और परब्रह्म का शान्ति में वास हो।

सर्व स्थानों में,
सर्व काल में,
सर्व मनुष्यों में,
और इस समस्त चराचर जगत में
शान्ति हो।

केवल शान्ति ही शान्ति हो,
अन्तर में शान्ति
और बाहर भी शान्ति।
अन्य कुछ नहीं
केवल शान्ति हो।

शान्ति सदैव बढ़ती रहे—
यह सदैव जगमगाती रहे—
हमारे जीवन में और हमारे संसार में।

ॐ। शान्तिः। समस्त दैहिक व मानसिक दुःखों से निवृत्ति हो।

ॐ। शान्तिः। तत्त्वों, प्रकृति, इस भौतिक जगत और इसमें वास करने वाले प्राणियों से उत्पन्न होने वाले दुःखों से निवृत्ति हो।

ॐ। शान्तिः। देवी-देवताओं, पारलौकिक आत्माओं और अन्य आत्माओं से उत्पन्न होने वाले दुःखों से निवृत्ति हो।

© २०१९ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

ये प्रार्थनाएँ इन ग्रन्थों में से उद्धृत हैं :

बृहदारण्यकोपनिषद् १.३.२८। अंग्रेज़ी भाषान्तर © २०१९ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन द्वारा।

यजुर्वेद ३६.१७। अंग्रेज़ी भाषान्तर © २०१९ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन द्वारा।